आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : चौदहवां | अंक : छठा | अक्टूबर-2016

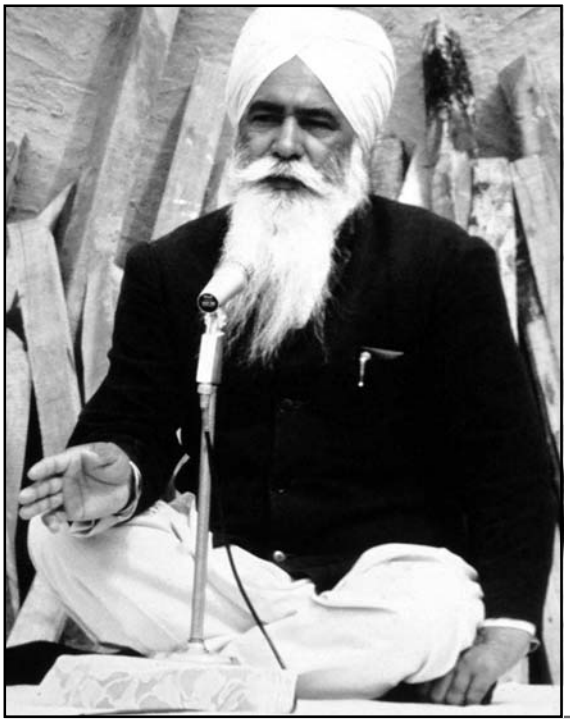

5

सतगुरु की संभाल

(सवाल-जवाब)

15

आत्मा की मन को विनती

(सतसंग)

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
096 67 23 33 04
099 28 92 53 04

उप संपादक-नन्दनी

सहयोग-मास्टर प्रताप सिंह व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अक्टूबर 2016 -175- मूल्य - पाँच रुपये

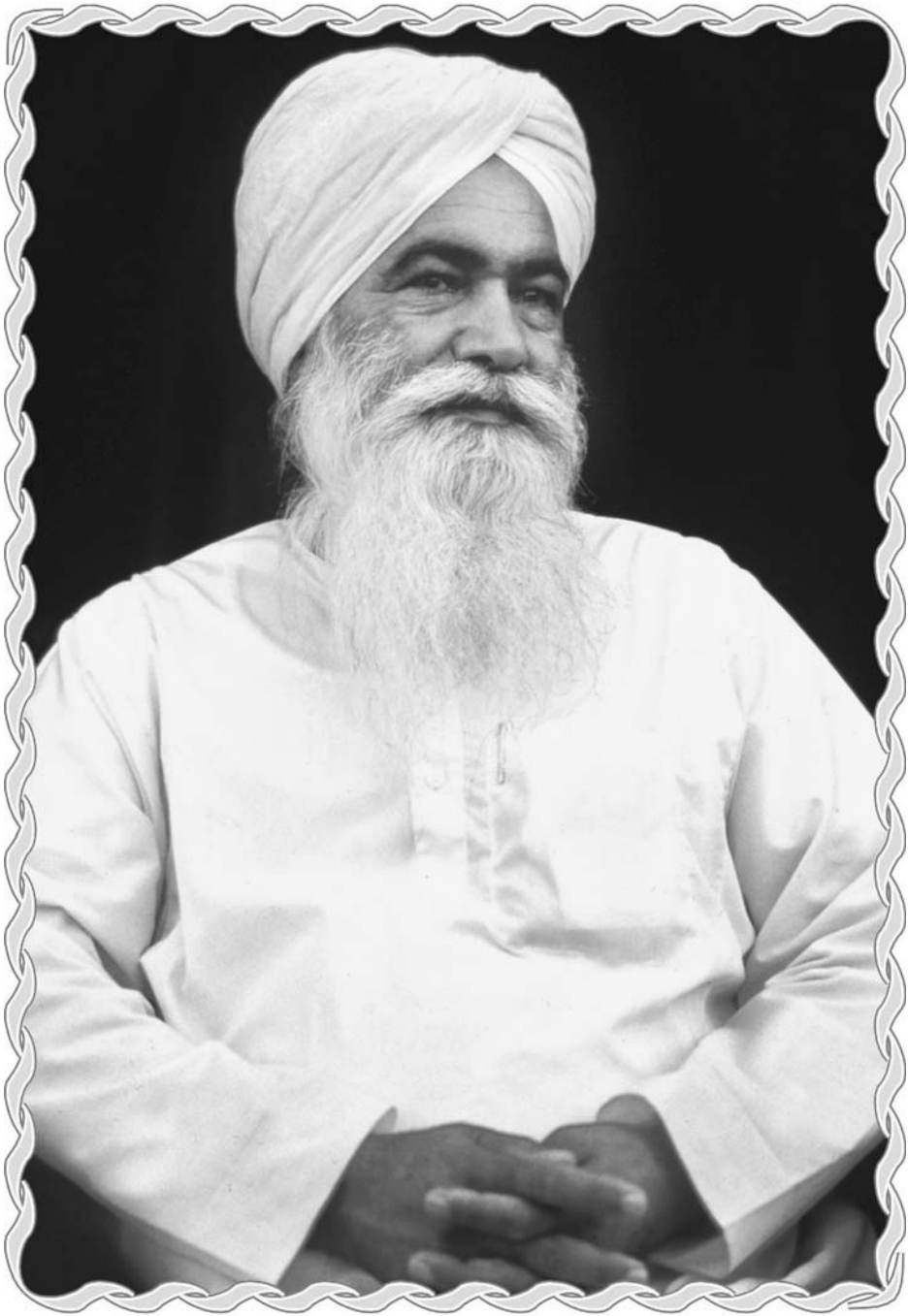

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सतगुरु की संभाल

16 पी.एस आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी:- *सन्त जी! आपने पहले बताया था कि कभी-कभी सतगुरु हमें अंदर के अनुभवों से दूर रखता है क्योंकि हमारे अंदर अहंकार होता है कि हम इन अनुभवों को संभालकर नहीं रख पाएँगे इसलिए वे अनुभव शिष्य से छिपाए जाते हैं। आपने यह भी बताया था कि हमें अपना बाहरी जीवन भी देखना चाहिए कि हम तरक्की क्यों नहीं कर रहे? हम अनुशासन में असफल रहते हैं इसे जानने का क्या तरीका है?*

बाबा जी:- इसलिए परमपिता कृपाल ने डायरी लिखने के लिए कहा था ताकि हम जान सकें कि हम कहाँ पर हैं और क्या अच्छे-बुरे कर्म कर रहे हैं? हम जब कभी अच्छा या बुरा कर्म करते हैं तो हमें इसका पता होता है। ऐसा नहीं है कि कोई दूसरा आदमी हमारे लिए अच्छा या बुरा कर्म करेगा। हमें ही उन अच्छे या बुरे कर्मों का भुगतान करना पड़ेगा।

फरीद साहब कहते हैं, ''किसान मिर्च बीजकर खजूर प्राप्त करने की आशा कैसे कर सकता है? या कपास बीजकर ऊन कैसे प्राप्त कर सकता है?'' मैं अक्सर कहा करता हूँ कि हम जब भी कोई काम कर रहे होते हैं तो हम उसके नतीजे को भी जानते हैं। हम जब कोई चीज बोते हैं तो हम जानते हैं कि क्या पैदा होगा? बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''आप बेमौसम बीज बीजकर अच्छी फसल की आशा कैसे कर सकते हैं?''

जब हम ईमानदारी और पवित्र विचारों से भजन-अभ्यास करेंगे तो हमें इस तरह की कोई शिकायत नहीं होगी तब हम देख

सकेंगे कि सतगुरु हमारे लिए क्या कर रहे हैं। जो अपने अभ्यास की तरक्की जानना चाहते हैं कि वे कहाँ पहुँचे हैं तो उन्हें अपने जीवन को पवित्र बनाने के लिए कठिन मेहनत करनी चाहिए। जो ईमानदारी से अपने जीवन को पवित्र व विचारों को शुद्ध रखते हुए भजन करते हैं वे केवल तरक्की ही नहीं करते बल्कि यह भी देखते हैं कि किस तरह **सतगुरु उनकी संभाल कर रहे हैं**?

मैं अक्सर यह कहानी सुनाया करता हूँ कि सुथरा नाम का एक लाधड़क फकीर था। उसने कई मनोरंजक कहानियाँ लिखी हैं। एक बार सुथरे ने किसी से पूछा, ''मकान कैसे मजबूत बनता है?'' उस आदमी ने कहा, ''मकान में खम्बे लगाने से मकान मजबूत बनता है।'' सुथरे ने मकान के अंदर खम्बे लगाने शुरू कर दिए और सारा मकान खम्बों से भर गया। मकान में बैठने के लिए भी जगह नहीं बची। अचानक बरसात शुरू हो गई और सुथरा मकान के बाहर खड़ा होकर बरसात में काँप रहा था। वहाँ से एक राहगीर गुजरा तो उसने सुथरे से पूछा, ''आप मकान के अंदर क्यों नहीं हो जाते?'' सुथरे ने कहा, ''अगर मकान में कोई जगह होती तो मैं एक खम्बा और न लगा देता?''

एक तरफ तो हम यह पूछते हैं कि सतगुरु हमारी तरक्की की रक्षा कैसे करते हैं? दूसरी तरफ हम काम, क्रोध, लोभ को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। हम शिकायत करते हैं कि हमें कैसे भरोसा हो कि **सतगुरु हमारे भजन-अभ्यास की संभाल कर रहे हैं।** हमारी हालत भी सुथरे जैसी है जिसने सारा मकान खम्बों से भर दिया अपने लिए कोई जगह नहीं छोड़ी।

हमने परमात्मा के बैठने की जगह को काम, क्रोध और संसार की सभी बुरी चीजों और इच्छाओं से भर रखा है। जब

हमारे अंदर कोई जगह ही नहीं बची तो हम अंदर जाकर कैसे देख सकते हैं कि गुरु हमारे लिए क्या कर रहे हैं और वे हमारे भजन को कैसे संभाल रहे हैं?

परमात्मा आपके अंदर है। परमात्मा सदा आपकी निगरानी कर रहा है। वह आपके सोचने से पहले ही आपके विचारों को जानता है। वह आपके हर काम को देखता है, आपकी हर भावना और विचारों को जानता है। आप जो चाहते हैं वह बिना माँगे ही आपको दे देता है क्योंकि **सतगुरु आपकी संभाल कर रहे हैं।**

सतगुरु चाहते हैं कि आप शरीर को छोड़कर अपने सच्चे घर सच्चखंड पहुँचें इसलिए **सतगुरु सदा आपकी संभाल करते हैं**। जब कभी सेवक बुरा काम करता है तो काल गुरु को महसूस करवाता है कि आपने इस आदमी को नाम दिया है। क्या यह आदमी नामदान प्राप्त करने के लायक है? उस समय सतगुरु को चुप रहना पड़ता है लेकिन सतगुरु फिर भी यही कहते हैं, ''यह मेरा प्यारा बेटा है, मासूम है। यह नहीं जानता कि यह क्या कर रहा है? यह धीरे-धीरे अपनी भूलों को समझ जाएगा और फिर ऐसा नहीं करेगा।''

सतगुरु बहुत सब्र वाले होते हैं। सतगुरु हमारे अंदर बैठे हैं **सतगुरु सदा हमारी संभाल कर रहे हैं**, वे हमारे भजन की रक्षा करते हैं। उन्होंने हमें 'नाम' दिया है वे जानते हैं कि हम कब अपने कर्मों से मुक्त हो जाएँगे, हम कब बुरे कर्म करना छोड़ देंगे? जिस तरह बंदूक से गोली निकलती है उसी तरह हमारी आत्मा 'शब्द' पर सवार होकर अपने असली घर सच्चखंड चली जाएगी। हमारे बुरे कर्म ही हमारी आत्मा को इस शरीर में रखते हैं ऐसी कोई चीज नहीं जो हमारी आत्मा को वापिस अपने असली घर सच्चखंड जाने से रोक सके।

लगभग चार साल पहले महाराज कृपाल के एक सतसंगी ने बताया कि अंदर से उसकी आत्मा का ऊपर की ओर खिंचाव हो रहा है और सतगुरु उसकी पिटाई कर रहे हैं। वह सब्जी बेचने का काम करता था, वह सब्जी पर पानी छिड़ककर धोखा करता था ताकि पानी से सब्जी का वजन बढ़ जाए। सतगुरु उससे कह रहे थे कि तुम गलत काम कर रहे हो।

कुछ समय बाद वह सतसंगी 77 आर.बी. आश्रम आया और उसने माफी माँगी। मैंने उससे कहा, ''जिस परमात्मा ने आपको माफ करना है वह आपके अंदर है। आप यह वायदा करें कि अब आप सब्जी पर पानी छिड़ककर सब्जी का वजन नहीं बढ़ाएंगे तो आपको माफी मिल सकती है।'' तब उसने वायदा किया, वह अभी जीवित है और वही धँधा करता है। उसने प्रायश्चित कर लिया कि वह अपने धँधे को ईमानदारी से चलाएगा। आमतौर पर सन्त ऐसा नहीं करते लेकिन कभी-कभी लोगों को दिखाने के लिए सतगुरु ऐसा चमत्कार कर देते हैं।

हमें दिन में किए गए अच्छे और बुरे कर्मों का पता होना चाहिए। जब हम दिन के आखिर में डायरी लिखने बैठते हैं तो हमें पता होना चाहिए कि आज हमने कितने अच्छे या बुरे कर्म किए? हमें यह भी सोचना चाहिए कि हमने बुरे कर्म क्यों किए? हमें यह भी जानना चाहिए कि आज ज्यादा भजन-अभ्यास क्यों नहीं किया और सुस्त क्यों रहे? हमें ईमानदारी से डायरी भरनी चाहिए ताकि हम जान सकें कि हम कहाँ पर खड़े हैं और कौन-कौन सी चीजें हमारी तरक्की में बाधक हैं?

आप लोग सतसंगी हैं, आप सन्तमत पर चलते हैं; आपने गुरु धारण किया हुआ है इसलिए आपकी जिंदगी का बीमा हो

गया है। आपके सतगुरु को पूरा भरोसा है कि वह आपको सच्चखण्ड लेकर जाएँगे, इसमें जरा-भी संदेह नहीं है लेकिन आप सारे संसार के लोगों की हालत देखें कि भोग-विलास और अन्य बुरी चीजें उनका नुकसान कर रही हैं। लोग इन चीजों को गंभीरता से नहीं समझते इसलिए वे अपना जीवन पवित्र नहीं बनाते और सदा ही अपनी ज़िंदगी को दागदार बनाते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''जब हमारी शादी हो गई तो पत्नी के साथ सम्बंध रखना ठीक है लेकिन बिना शादी के किसी के साथ कामवासना रखना व्याभिचार कहलाता है। जो लोग इस तरह का व्याभिचार करते हैं उन्हें कभी माफ नहीं किया जा सकता, उनकी आत्मा कभी पवित्र नहीं हो सकती। वे कभी 'शब्द' पर सवार नहीं हो सकते और अपने असली धुरधाम वापिस नहीं जा सकते।''

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''जो अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरे की पत्नी के पास जाता है वह अँधे व्यक्ति की तरह है जो सच्चाई को नहीं देखता झूठी चीजों के पीछे भागता है। हमने अपना जीवन इस तरह का बना लिया है कि हम अपने साथी की ओर ध्यान नहीं देते और दूसरे लोगों के पास जाते हैं। इस तरह हम अपने आपको बर्बाद कर रहे हैं।''

सुखमनी साहब में गुरु अर्जुनदेव जी ने लिखा है, ''हमें दूसरी स्त्रियों की ओर नहीं देखना चाहिए। हमें सदा सतगुरु की संगत में रहना चाहिए। स्त्रियों को पर-पुरुष की ओर काम-भरी आँखों से नहीं देखना चाहिए। यह सिर्फ स्त्रियों के लिए ही नहीं पुरुषों पर भी लागू होता है कि पुरुषों को भी दूसरी स्त्रियों की ओर काम-भरी नज़रों से नहीं देखना चाहिए।''

गुरु अर्जनदेव जी महाराज कहते हैं, ''काम के वश होकर स्त्री दूसरे पुरुष के साथ भोग भोगने का अवसर नहीं चूकती। अंत में काम, क्रोध, लोभ उसे बर्बाद कर देते हैं। जब कोई आदमी व्याभिचार करता है या बुरे कामों में लगा होता है क्या उसके दिमाग पर असर नहीं पड़ता? वह खुद भी सोचता है कि मैं बुरा काम कर रहा हूँ। उसके अंदर की ताकत बुरे काम करने वाले व्यक्ति को श्राप देती है। वह सदा पछतावा करता है और चिन्ताग्रस्त रहता है अगर दूसरे लोगों को उसके बुरे कर्म का पता चल जाता है तो वह अपमानित होता है।''

मुझे महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैंने आपके बहुत से सतसंग सुने हैं। उस महान सतगुरु के शब्द अभी भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं। आप अक्सर सतसंगों में कहा करते थे, ''अगर आप शादी के बिना नहीं रह सकते तो आपको शादी कर लेनी चाहिए। शादी करवाने में गलत बात क्या है? बाहर से तो हम बहाना करते हैं कि हमने शादी नहीं करवाई हम पवित्र जीवन बिता रहे हैं लेकिन अंदर से हम स्त्रियों के साथ भोग भोगने के बारे में सोच रहे होते हैं। बाहर बैठकर हम दूसरे लोगों के सामने बहाना करते हैं कि हम अच्छे अभ्यासी हैं लेकिन अंतर में हम पाप कर रहे होते हैं।''

सतगुरु आपके अंदर बैठा है क्या वह आपके पापों से अंजान है? हम जो कुछ करते हैं सतगुरु सब जानते हैं अगर आप स्वप्न में भी स्त्री के साथ भोग भोगने का विचार नहीं रखते तो आप छत पर जाकर होका लगा सकते हैं कि आप पवित्रता रखते हैं। परमपिता परमात्मा आप पर दयालु होगा कि आपने इस बीमारी को काबू कर लिया है। तब शादी न करवाना ठीक है अगर काम आपको

स्वप्न और विचारों में भी परेशान करता है तो शादी करवाने में कोई हर्ज़ नहीं, आपको बेहिचक शादी करवा लेनी चाहिए। यह अभ्यास में तरक्की करने में आपकी मदद करेगा।

मैंने कई बार सतसंगों में कहा है कि सतगुरु आपको अपने साथी के प्रति वफादार रहने के लिए कहते हैं क्योंकि यह हमारी रूहानी चढ़ाई को प्रभावित करता है। जो लोग स्थूल संसार में पवित्रता नहीं रखते वे जब सूक्ष्म संसार में जाते हैं तो वहाँ सूक्ष्म पुरुष और स्त्रियाँ मिलती हैं जो बहुत नूरी और सुंदर होते हैं। जो लोग स्थूल शरीर में काम पर काबू नहीं रख पाते वे जब सूक्ष्म शरीर में नूरी पुरूषों और स्त्रियों के संपर्क में आएंगे तो क्या वे पवित्र रह सकेंगे? इसलिए हमें पवित्रता बनाए रखनी चाहिए।

कुछ सन्त गृहस्थी हुए हैं और कुछ त्यागी भी हुए हैं। गृहस्थी सन्तों ने यह नहीं कहा कि त्याग बुरा है और न त्यागी सन्तों ने कहा है कि गृहस्थ बुरा है। चाहे आप गृहस्थी रहें या त्यागी इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। सन्त सदा कहते हैं अगर मन आपके अंदर काम का वेग नहीं उठाता तो आप शादी न करवाएं। सन्तमत में शादी की मनाही नहीं है आप आसानी से शादी करवा सकते हैं।

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि आप पवित्र जीवन बिताएं। पवित्र जीवन जीने का आनन्द और ही है, एक समय आएगा जब आपको पवित्रता छोड़ने की इच्छा ही नहीं होगी।

सवाल यह पूछा गया था कि सतगुरु ने हमारे अभ्यास की तरक्की को छिपाकर रखा है हम उसे कैसे जान सकते हैं? जब बारिश होती है, बर्फ गिरती है तो उस जगह से जो हवा चलती है वह ठण्डी होती है। वह हवा चारों तरफ ठण्डक देती है इसी तरह अगर आप पवित्र जीवन बिताएंगे तो क्या गुरु को इसका पता नहीं

चलेगा? वह तो आपके अंदर बैठा है। आप पवित्र जीवन जिएंगे तो आपको अपनी तरक्की का पता चलेगा और आपके नजदीक रहने वाले भी कहेंगे कि यह एक पवित्र पुरुष या पवित्र स्त्री हैं।

एक बार आर्मी में चोरी हुई और बहुत-सी बन्दूकें चुरा ली गईं। यह कहा गया कि ऐसा पहरेदारों की लापरवाही से हुआ। कमाण्डर और हर आदमी इस चोरी से परेशान था कि चोरी किसने की है? कई लोगों को सजा दी गई जिसमें निर्दोष भी शामिल थे। सच्चाई का पता कैसे लगाया जाए? आर्मी में मुझे भाई जी या ज्ञानी जी कहकर बुलाया जाता था। हर आदमी जानता था कि मैं सच बोलने वाला ईमानदार आदमी हूँ, मेरी बहुत कद्र की जाती थी। हमारे कमाण्डर ने हर आदमी से कहा कि ज्ञानी जी के शरीर को छूकर कहे, ''ज्ञानी जी! मैं ईमानदार हूँ और चोरी के बारे में कुछ नहीं जानता।'' पन्द्रह सौ लोगों में से केवल चार आदमी ही इस चोरी में शामिल थे, वे मेरे शरीर को छूकर यह नहीं सके कि वे सच्चे हैं और वे चोरी के बारे में कुछ नहीं जानते।

यह मेरी पवित्रता के कारण ही था कि वे मेरे शरीर को छू नहीं सके। मैंने उन्हें कभी अपनी पवित्रता के बारे में नहीं बताया था। जो ईमानदार थे उन्हें कोई समस्या नहीं थी। उन्होंने मुझे छुआ और कहा, ''मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता।'' असली चोर जब मेरे पास आए तो वे काँपने लगे। अगर आप पवित्रता का जीवन बिता रहे हैं, जब आप अंदर से पवित्र हैं तो आपकी पवित्रता बड़ी महान होगी और ये चारों ओर फैल जाएगी। लोग आपके सामने आकर झूठ नहीं बोल सकेंगे। अगर आप पवित्र जीवन बिताएंगे तो क्या आपके मित्रों और पड़ोसियों को इसके बारे में

पता नहीं होगा? निश्चय ही आपकी पवित्रता खुशबू की तरह फैल जाएगी। जिनकी नाक खुली होगी वे इसकी खुशबू लेंगे और जानेंगे।

फौज में माँस-शराब खाना आम बात है। मैं एक ऐसा व्यक्ति था जो ये सब चीजें नहीं खाता था। सभी लोग जानते थे कि मैं माँस-शराब का सेवन नहीं करता। फौज में नौकरी करते हुए मैं कभी छोटी-मोटी चीजें खरीदने के लिए बाहर नहीं गया। मैं अपने मित्रों से चीजें मँगवा लिया करता था क्योंकि मैं धार्मिक ख्यालों का था और मैं सदा अपना समय धार्मिक स्थानों पर बिताया करता था। मैं पवित्र जीवन रखता था उसी पवित्रता के कारण सभी मुझे जानते थे; लोग मेरे नाम की शपथ लिया करते थे।

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि हम जिस घर में या जिस धरती पर रहते हैं वह घर और धरती हम पर गर्व करे कि हमारे ऊपर कोई अच्छा इंसान रहता है। आपके सतगुरु पावन और पवित्र हैं। वह संसार की गंदगी और बुरी चीजों से ऊपर हैं। हमें भी उन्हीं की तरह पावन व पवित्र बनना है ताकि वे हमारे अंदर प्रकट हो सकें और हम पर गर्व करें कि उनका शिष्य पावन और पवित्र है।

जब परमपिता कृपाल पहली बार मेरे आश्रम आए, तब मैंने आपसे कहा, ''सतगुरु! मैं नहीं जानता कि मैं आपसे क्या सवाल करूँ? मेरा दिल और दिमाग खाली है, मैंने बचपन से ही इसे खाली रखा है।'' आपने मुस्कुराकर कहा, ''मैं दिल और दिमाग खाली देखकर ही पाँच सौ किलोमीटर की यात्रा करके आपको कुछ देने के लिए आया हूँ।'' आप दयावान थे और मैं दया का भूखा था। मैं आग की तरह जल रहा था, आपके पास नाम था। आपने मेरे ऊपर नाम की वर्षा करके मेरे तपते हुए हृदय को ठण्डा कर दिया।

***

28 मार्च 1984

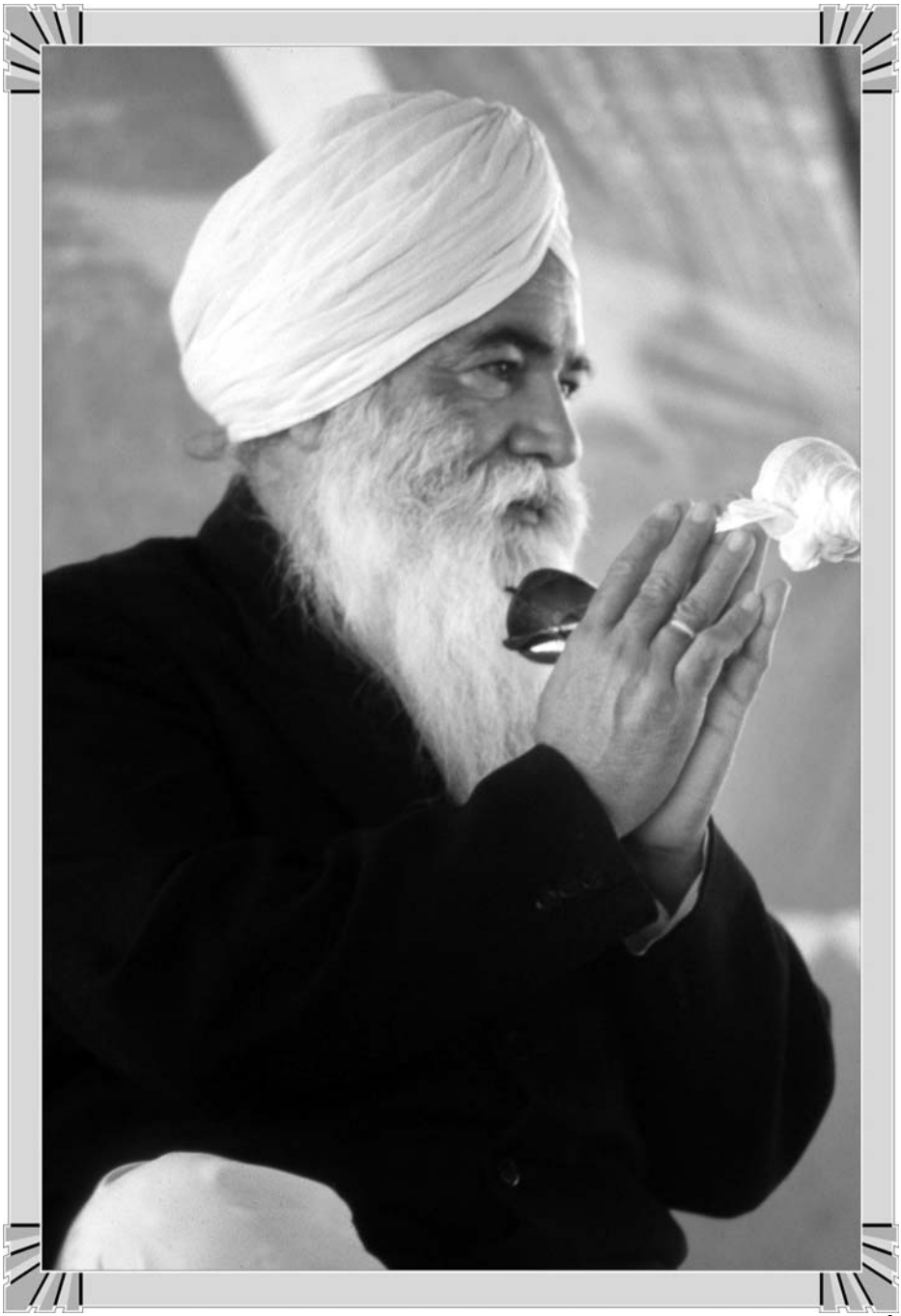

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आत्मा की मन को विनती

हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी | DVD 256 | मुम्बई

मैं परमात्मा गुरुदेव सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया और विषय-विकारों के जंगल में भटकी हुई इस आत्मा को नाम का अमृत पिलाकर शान्त किया। सहजो बाई ने कहा थाः

राम तजूँ पर गुरु न बिसारूं, हरि को गुरु सम न निहारूं।

मैं राम को तो भूल सकती हूँ लेकिन गुरु को नहीं बिसार सकती। ऐसा नहीं कि सन्त-महात्मा परमात्मा के विरोधी होते हैं या परमात्मा की निन्दा करते हैं लेकिन सच्चाई यह है वे परमात्मा के प्यारे बच्चे होते हैं। परमात्मा के अंदर होते हुए भी हम अनेकों बार कीड़े-पतंगे, हाथी-घोड़े बने। कई बार इंसानी जामें में भी चक्कर लगाते रहे फिर भी कभी शान्ति नहीं मिली तड़पते हुए आए और तड़पते हुए ही चले गए। न परमात्मा मिला और न परमात्मा ने हमारा जन्म-मरण का चक्कर खत्म किया।

सहजो बाई कहती हैं, ''गुरु ने मेरे अंदर ज्ञान का दीपक, नाम की जोत जला दी और पाँच डाकु भी दिखा दिए। परमात्मा का प्रकाश भी अंदर ही दिखा दिया, परमात्मा छिपा हुआ था गुरु ने प्रकट करके दिखा दिया। इसमें गुरु की बड़ाई है। परमात्मा ने कर्मों के मुताबिक कुटुम्ब जाल में फँसा दिया लेकिन गुरु ने सुरत-शब्द का अभ्यास बताकर इन सारे बंधनों से मुक्त कर दिया। अगर मैं सारी धरती का कागज बना लूं, सारे समुन्द्र की स्याही बना लूं और सारी वनस्पति की कलम बना लूं तो भी मैं गुरु की महिमा नहीं लिख सकती।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

किस मुख गुरु सलाहिए गुरु करण कारण समरथ।

जिसने मिश्री खाई है वही मिश्री का स्वाद बता सकता है जिसने नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे जाकर आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर उस मन मोहनी मूरत गुरु को अंदर प्रकट कर लिया उसे पता है कि गुरु किस ताकत को कहते हैं। गुरु इंसान के जामें में छिपा हुआ एक हीरा है। मटकी में समुंद्र बंद है। उसने बाहर गरीबी धारण की हुई है, एक मामूली इंसान का जीवन बिता रहा है लेकिन वह अंदर परमात्मा के साथ जुड़ा हुआ है। महात्मा चतुरदास जी कहते हैंः

इक दिन सभा उल्लआँ लाई, बैठे मिल नर नारी जी।
कोई आखे सूरज नाहीं, कौन करे उजयारी जी।
वारो वारी सब्बे बोले, कर कर सोच विचारी जी।
जे कोई सूरज सच्चा मन्ने ते अकल ओस दी मारी जी।
ओना विच इक वड्डा उल्लू, बानी ओस उचारी जी।
अज तक सूरज हम नहीं डिट्ठा, वड्डी उमर हमारी जी।।

मनमुख को उल्लु और गुरुमुख को हंस कहा गया है। वहीं पेड़ पर एक हंस भी बैठा था। हंस ने कहाः

ईक हंस टीसी पर बैठा, बाणी ओस उचारी जी।
है प्रभात देख लो सारे, लक्खां किरण पसारी जी।
उल्लु सब टैं टैं कर हँसे, हंस मौन तब धारी जी।
चतुरदास ऐह अजब अदालत, तीन लोक से न्यारी जी।।

जिसने सूरज देखा है वह कहता है कि सूरज की अनेकों किरणें धरती पर आ रही हैं अगर आप सूरज को नहीं देखते तो इसमें सूरज का क्या कसूर है। मनमुखों की सभा में सब कहने लगे कि ऐसे ही कथा-कहानियां लिखी है कोई परमात्मा नहीं अगर परमात्मा होता तो हम न देख लेते? महात्मा कहते हैंः

मुर्शिद पासों इल्म न पढ़या, ताईयों सदा गँवार रहे।

मनमुख को न कोई गुरु मिला न उसने रूहानी अक्षर पढ़े न ऊपर ही गया। मनमुख कहता है, ''मैंने इतनी किताबे पढ़ी हैं अगर परमात्मा होता तो मुझे किताबों में से मिल जाता। मेरी उम्र सबसे बड़ी है उसकी उम्र भी मुझसे छोटी है।'' वहाँ एक पहुँचा हुआ गुरुमुख जो मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर गया हुआ था, उसने कहा, ''परमात्मा तो आपके अंदर है अगर आप नहीं देखते तो इसमें परमात्मा का कसूर नहीं।'' गुरुमुख एक था और मनमुख ज्यादा थे। सारे मनमुख हँसकर कहने लगे कि देखो यह कितनी हँसी-मजाक की बात करता है परमात्मा तो है ही नहीं।

सैदपुर का रहने वाला बहादुर सिंह महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा था, वह महाराज सावन सिंह जी के आश्रम के नजदीक ही रहता था। वह अपनी आप बीती बताया करता था, ''मैं गांव में लोगों को दो-दो घंटे समझाता कि गुरु बाबा सावन सिंह जी में ये सिफत है, गुरु मिलने के ये फायदे हैं। बाबा सावन सिंह जी बहुत पहुँचे हुए महात्मा हैं। मौत के वक्त बाबा सावन सिंह जी अपने नामलेवा को ही नहीं उन्हें भी संभाल लेते हैं जिन्हें उन पर प्रतीत आ जाती है लेकिन मेरे भाई लाभसिंह ने मामूली सा कह देना कि यह बाबा सावन सिंह जी का एजेन्ट है। मेरे दो घंटे की बातचीत का गांव के लोगों पर इतना रंग नहीं चढ़ता लेकिन लोग उसकी इस छोटी सी बात को मान लेते थे।''

उस समय अंग्रेजो का राज्य था। लाभसिंह बुरी संगत में पड़कर डाका मारने लगा। उस समय लोग छिपकर डाके डालते लोगों को कत्ल कर देते थे, आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं। सैदपुर में महाराज सावन सिंह जी का सतसंग रखवाया गया।

लाभसिंह ने कहा, ''कल महाराज जी यहाँ सतसंग देने आएंगे तब मैं उनका सब कुछ छीन लूंगा, मैं उन्हें उठाकर ले जाऊंगा।'' बहादुर सिंह जानता था कि बहुत से लोग इसके साथ हैं कहीं ऐसा वाक्या न हो जाए। बहादुर सिंह ने महाराज सावन सिंह जी चरणों में जाकर कहा, ''मेरा भाई कत्ल करता है। उसकी बात समझ नहीं आती वह ऐसी बात कह रहा है।''

महाराज सावन ने कहा, ''बहादुर सिंह! तू क्यों डरता है, इसमें डरने वाली क्या बात है? अगर वह हमें उठाकर ले जाएगा तो हम खुद ही उसके साथ चले जाएंगे। सन्त जहाँ भी जाते हैं नाम जपते है और नाम ही जपवाते हैं।''

उस महान गुरु ने अंदर से ऐसी मौज वरताई कि अगले दिन लाभसिंह वहाँ सतसंग का इंतजाम करता हुआ नजर आया। जब उसने सतसंग सुना तो महाराज सावन सिंह जी के पैर पकड़कर कहने लगा, ''आप मुझे नाम जरूर दें, आप मुझे बख्श दें।'' महाराज जी ने हँसकर कहा, ''यह कोई तरीका है तू मेरे पैर तो छोड़।'' लाभसिंह ने कहा, ''आप जब हाँ कहेंगे मैं तभी आपके पैर छोडूंगा।'' महाराज जी ने कहा, ''तुझे एक शर्त पर नाम मिलेगा कि अब तू किसी का दिल नहीं दुखाएगा, डाका चोरी नहीं करेगा।'' लाभसिंह ने कहा, ''मैंने सब कुछ ही छोड़ दिया।''

लाभसिंह ने अपने हिस्से की जमीन बेच दी और जिस जिसको लूटा था उनके पैसे वापिस देने के लिए गया। उसने एक नई ब्याही हुई लड़की के गहने चुराए थे। आमतौर पर मालवा में उस समय लड़कियां अपने सिर के ऊपर एक बड़ी सी ठूठी और एक तरफ फूल पहनती थी। लाभसिंह ने उस लड़की के गहने चुराए थे जब वह उस लड़की को पैसे देने गया तब लड़की ने कहा, ''वीरा! मेरे गहने तो

सौ रूपये के थे लेकिन तू पचास रूपये ही दे रहा है।'' लाभसिंह ने कहा, ''बहन! मैंने जितने पैसे कमाए थे वह मैं तुझे लौटा रहा हूँ। चोरों को कौन पूरा मोल देता है?''

आखिर लाभसिंह अच्छी कमाई करता रहा। जब उसका अंत समय आया और महाराज जी आए तो वह रोकर कहने लगा, ''मेरी आत्मा सामने नहीं हो रही। मुझे बहुत शर्म आ रही है कि मैंने इस महात्मा के साथ कैसा सुलूक किया और यह महात्मा अंत समय में मेरी संभाल करने आया है।''

हम सब अच्छे इंसान हैं। सबके अंदर आत्मा है, आत्मा निर्दोष है। सन्तों की नजर आत्मा के ऊपर होती है। सभी महात्मा बताते हैं कि हमारे और परमात्मा के दरम्यान अगर कोई रूकावट है तो वह हमारे अपने ही मन की है। जब हम मन की रूकावट को दूर कर लेते हैं तो परमात्मा दूर नहीं हमारे अंदर ही है।

आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है इस शब्द में आत्मा मन को प्यार से समझाती है, ''मैं तेरी दासी हूँ जन्मों-जन्मों से तेरे बस में पड़ी हुई हूँ। तू मेरी विनती मानकर गुरु के दरबार में चल और गुरु से नाम प्राप्त कर। मैंने अपने गुरुदेव से सुना है और गुरुदेव ने दया करके अंदर भी दिखाया है कि तू यहाँ कंगाल बना फिरता है, धक्के खाता फिरता है लेकिन तेरा घर ब्रह्म है। तू वहाँ का कंमाडर इन चीफ है अगर तू मेरे साथ गुरु के चरणों में जाए तो तू अपने घर जाकर राजा बन जाना और मैं सतपुरुष के दरबार में चली जाऊंगी।''

मन आगे जवाब देगा कि यह मेरे बस की बात नहीं। मैं विषय-विकारों में फँस चुका हूँ। हो सकता है कि गुरु मुझे सतसंग के जरिए वचनों के थप्पड़ मारकर वापिस मेरे घर की तरफ मोड़ दे,

मेरे अपने बस में कुछ नहीं। आत्मा खुश होकर मन को गुरु के दरबार में लाती है और दोनों मिलकर अंदर चढ़ाई करते हैं। मन ब्रह्म में पहुँच जाता है और आत्मा सतलोक में पहुँच जाती है। आत्मा सतलोक की प्यारी पुत्री है। कबीर साहब कहते हैंः

कहो कबीर ऐह राम की अंश, जस कागज पर मिटे ने मंस।

आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है, यह शब्द गौर से सुनने वाला हैः

मन रे मान वचन इक मेरा।। मन रे मान वचन इक मेरा।।
मैं तेरी दासी जनम जनम की। तू हुआ स्वामी मेरा।।

आत्मा मन से कहती है, ''जब से यह दुनिया बनी है मैं तब से तेरे बस में पड़ी हुई हूँ। मैं तेरी दासी बनकर तेरे काम करती हूँ और तू मेरा मालिक बना हुआ है।''

तीन लोक का नाथ कहावे। तीन देव तेरा चेरा।।

आत्मा मन को प्यार से कहती है, ''तू त्रिलोकी का मालिक है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव तेरे शिष्य हैं। ब्रह्मा दुनिया को पैदा करता है, विष्णु पालन करता है और शिव संहार करता है।'' मन काल में से आया हुआ है।

ऋषि मुनि सब पर हुकुम चलावे। जती सती सब घेरा।

अब आत्मा मन से कहती है, ''प्यारेया! जति-सती, ऋषि-मुनि सब तेरी अंगुली के इशारे पर नाचते हैं। तू जिसे जो कह देता है वे तेरे आगे सिर झुका देते हैं, वे वही काम करते हैं।''

वेद व्यास का एक शिष्य जैमिनी ऋषि काफी पढ़ा-लिखा था। उसने कर्मों की फिलासफी पर एक पुराण लिखा जो अठारह पुराणों

में से एक है। जैमिनी ऋषि ने ग्रंथ लिखकर अपने गुरु वेद व्यास को पेश किया। वेद व्यास योगिश्वर गति को प्राप्त थे, कमाई वाले थे अंदर जाते थे। वेद व्यास ने जैमिनी ऋषि से कहा, ''जैमिनी! तेरा ग्रंथ अच्छा है लेकिन इससे तेरा मकसद पूरा नहीं होता। तेरी पढ़-पढ़ाई तुझे किसी भी समय धोखा दे सकती है।'' जैमिनी ने कहा, ''यह ग्रंथ बहुत अच्छा है इससे ज्ञान हो जाता है कि बुरा कर्म नहीं करना चाहिए। जब इंसान अच्छे और बुरे कर्म नहीं करेगा तो संसार में नहीं आएगा।'' जब जैमिनी नहीं माना तो वेद व्यास ने कहा, ''वक्त आने पर तुझे बताएंगे। माया ने बड़े-बड़े लोगों को छल लिया है, माया भ्रम को कहते हैं।''

अच्छे और बुरे कर्म मिलकर हमें इंसान का जामा मिलता है अगर बुरे कर्म होते तो हम नर्कों में जाते अगर अच्छे ही अच्छे कर्म होते तो हम स्वर्गों में बैठे होते। अब कुछ पुण्य और कुछ पाप हुए तो हमें इंसान का जामा मिला लेकिन इनमें से फायदा वही उठाएंगे जिन्हें पूरा गुरु पूरा महात्मा मिल जाता है।

एक रात बहुत जोर से आंधी-तूफान चल रहा था। वेद व्यास जी औरत का वेश धारण करके जैमिनी ऋषि की कुटिया के पास चले गए। उस औरत ने जैमिनी ऋषि से कहा, ''मैं एक राजा की राजकुमारी हूँ, मैं अपने साथियों से बिछुड़ गई हूँ। आप मुझे यहां रात कटवाएं और सुबह होने पर मुझे मेरे ठिकाने पर पहुँचा दे।'' जैमिनी ने कहा, ''मैं तुझे अपनी जगह पर रूकने नहीं दूँगा।'' औरत ने ऋषि की तारीफ की कि ऋषि तो बहुत नरम दिल होते हैं हर एक पर दया करते हैं। हम किसी की बात में नहीं फँसते अगर कोई हमारी बड़ाई कर दे तो हम बड़ाई में फँस जाते हैं। जब औरत ने जैमिनी की बड़ाई की कि महात्मा परोपकारी होते हैं तो जैमिनी

ने कहा, ''तू रात को मेरी कुटिया के अंदर सो जा अगर मैं भी आवाज दूं तो दरवाजा मत खोलना।''

जैमिनी सारी जिंदगी जंगलों में रहा था उसने कभी औरत की शक्ल नहीं देखी थी। जब वह अपने अभ्यास में बैठा तो उस औरत की शक्ल आँखों के आगे आई। मन अंदर से वकील की तरह अपने आप ही प्रेरित करता है। ऋषि के मन में ख्याल आया कि वह औरत अकेली है और मैं भी अकेला हूँ बातचीत करने में क्या हर्ज है, बाद में अभ्यास में बैठ जाएंगे।

जैमिनी ने दरवाजा खटखटाकर आवाज दी कि दरवाजा खोल। औरत ने कहा, ''आपने ही कहा था अगर मैं भी कहूँ तो दरवाजा मत खोलना।'' जैमिनी ने धमकाया कि मकान मेरा है या तेरा है? औरत ने कहा कि मुझे इस बात का पता नहीं, मैं आपकी कही बात पर पक्की हूँ मैं दरवाजा नहीं खोलूंगी, उसने दरवाजा नहीं खोला।

काम का वेग इंसान को बेशर्म बना देता है। नजदीक खड़ा आदमी दिखाई नहीं देता इंसान रिश्तेदारी ही भूल जाता है, मन को नहीं मारता। जैमिनी ऊपर से छत फाड़कर नीचे कूद गया। उसने देखा उसके गुरु वेद व्यास जी चौंकड़ी मारकर बैठे थे। वेद व्यास जी को देखकर जैमिनी ऋषि के होश उड़ गए। वेद व्यास ने हँसकर कहा, ''क्यों भई जैमिनी! तू कहता था कि मैंने इतना अच्छा ग्रंथ लिखा है, मैं मन के बस में नहीं आता; अब यह देख?''

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''किताब लिखना मन-बुद्धि का काम है, जहाँ मन-बुद्धि की हद खत्म हो जाती है वहाँ से रूहानियत की अलिफ बे शुरू होती है।'' मन जड़ है यह आत्मा से ताकत लेकर आत्मा को ही कमजोर कर देता है। जिस तरह हम

पेड़ो के ऊपर अमरबेल देखते हैं अमरबेल की अपनी जड़ नहीं होती वह पेड़ से सतह लेकर पेड़ को ही कमजोर कर देती है।

तेरे बस सुर नर और जोगी। कोइ तेरा हुकम न फेरा।

आप कहते हैं, ''तूने राक्षस और देवता भी अपने बस में कर लिए। हम स्थूल दुनिया में हैं तो स्थूल मन हमारा पीछा नहीं छोड़ता। सूक्ष्म में जाते हैं तो सूक्ष्म मन पीछा नहीं छोड़ता बंदर की तरह नचाता है अगर कारण देश में जाते हैं तो वहाँ कारण मन है। जहाँ तन और मन है वहाँ सुख-शान्ति कहाँ है?''

जिस चाहे तिस जगत फँसाए। और चाहे तिस करे निबेरा।

सब कुछ तेरे हाथ में है। तू जिसे यहाँ फँसाकर रखना चाहता है उसे बुरे कर्मों विषय-विकारों और शराबो-कबाबों में फँसा देता है; उसे होश ही नहीं आने देता। तू जिसे बचाना चाहता है उसे साध संगत में लाता है उसे 'शब्द-नाम' की कमाई में लगा देता है।

ऐसी महिमा सुनी तुम्हारी। ताते तुम पै करूँ निहोरा।।

मैंने अपने गुरु से तेरी महिमा सुनी है कि यह तेरा खेल है, सब कुछ तेरे हाथ में है इसलिए मैं तेरे आगे विनती करती हूँ।

इस तन नगरी तुच्छ देश में। क्यों कैदी होय पड़े अंधेरा।।

तू क्यों इस अंधेर नगरी में कैद होकर बैठा है? पता नहीं कब इस नगरी को छोड़कर फिर किसी और अंधेर नगरी में जाकर पड़ जाना है।

सतगुरु मोसे कहा बचन इक। मन को संग ले चलो सबेरा।।

मुझे मेरे सतगुरु ने दया करके बताया है कि तू मन को साथ लेकर अपने घर सच्चखंड की तरफ चल पड़। जब हम मन को साथ

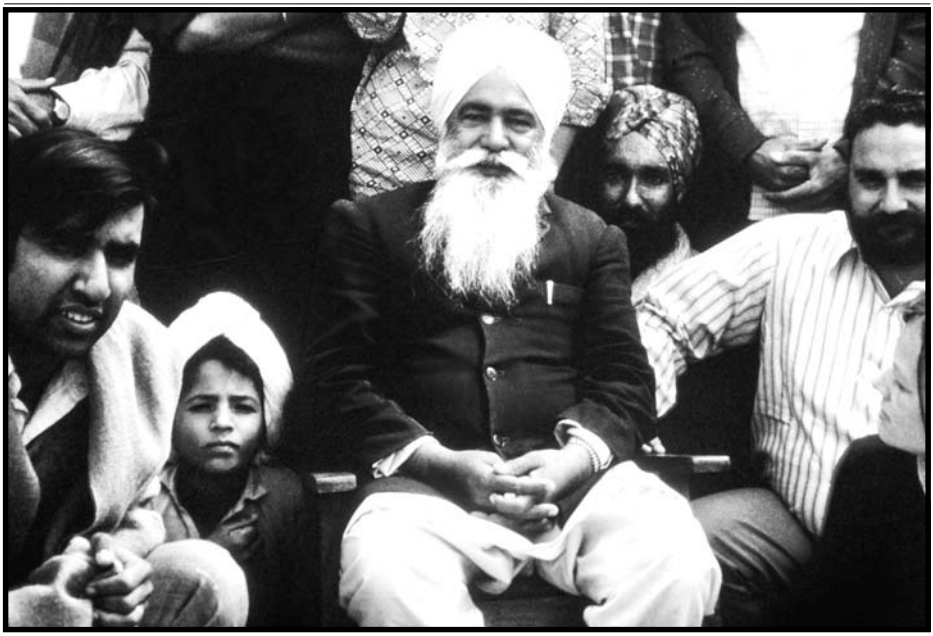

नहीं लेते इसे हठ कर्मों या डिसीप्लेन के जरिए टिकाना चाहते हैं तो मंदिर-गुरुद्वारों में छिप जाते हैं या घर-बार छोड़कर जंगलों-पहाड़ों में चले जाते हैं। हम लोगों को महात्मा बनकर दिखाते हैं लेकिन जब कभी मन को मौका मिलता है वह हमें उसी तरह दुनिया में ले आता है और हम बुरे कर्म करने शुरू कर देते हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि मन को हठ कर्मों के जरिए हटाना इस तरह है जैसे हम जहरीले साँप को टोकरी में बंद कर दें। साँप जितनी देर टोकरी में बंद रहता है उतनी देर हम साँप के जहर से बचे हुए है। साँप के अंदर गुस्सा भी है और जहर भी है। साँप जब टोकरी में बंद रहता है तो उसके अंदर ज्यादा गुस्सा और ज्यादा जहर पैदा हो जाता है, जब साँप को मौका मिलता है वह डंक मारने से बाज नहीं आता। आप कहते हैं:

सप पिड़ाई पाईऐ विख अंतर मन रोस।

साँप के अंदर गुस्सा और विष उतना ही है। योगियों के पास एक ऐसी बूटी होती है जब वे साँप के दाँतों पर उस बूटी को लगा देते हैं तो साँप के दाँत खट्टे हो जाते हैं या उसके दाँत निकाल देते हैं फिर साँप डंक नहीं मार सकता। हम आम शहरों में देखते हैं कि लोग ऐसे साँपों को गले में डालकर घूमते हैं। उन साँपों की शक्ल मुँह और जीभ वैसी ही है लेकिन उसकी जहर वाली थैली निकाली होती है। साँप के जहर वाले दाँत किस तरह निकालने हैं?

मन मूसा पिंगल पया पी पारा हर नाम।

इस जहर के लिए 'नाम' पारे का काम करता है अगर चूहा पारा पी ले तो उससे हिला नहीं जाता। वह जीवित रहता है चलता-फिरता है लेकिन दूर नहीं जा सकता।

ता ते तुम पै करूँ बीनती। चढ़ो गगन क्यों करो अबेरा।

इसलिए मैं तेरे आगे विनती करती हूँ कि तू जल्दी कर, ऊपर ब्रह्म में चल क्यों देर करता है?

इन्द्री द्वार विषय अब त्यागों। करो अभी सुलझेरा।।

तू इन्द्रियों के द्वार विषय-विकारों को छोड़ दे। जुबान की इन्द्री के चस्कों को छोड़ दे। अंदर नाम का स्वाद ले बाहर के खट्टे-मीठे स्वादों में न लग। कान की इन्द्री के राग पर बाहर दौड़ा फिरता है तू अंदर की इन्द्री का राग सुन। इसी तरह बाकी की इन्द्रियां हैं तू इनके स्वादों को छोड़ दे और अंदर चल।

तुम सा संगी और न कोई। मैं तुम्हरी और तुम ही मेरा।

हम जिस दुनिया का साथ लिए बैठे हैं ये सब बाहर के संगी हैं। अपना असली साथ तो ब्रह्म तक है, हम दोनों ने ब्रह्म तक इकट्ठे जाना है। तू वहाँ अपने घर में रह जाना और मैं आगे चली जाऊंगी।

मुझ दासी का कहना मानों। गगन मंडल चढ़ बाँधो डेरा।।
जैसे थे तैसे फिर होइ हो। क्यों दुख सुख यहाँ सहो घनेरा।।

तू ऊपर चल। तू ब्रह्म में से आया है ब्रह्म बन जा। इस दुखों की नगरी में कभी दुख के हाथों दुखी है अगर थोड़े बहुत सुख आते हैं तो अहंकार पीछा नहीं छोड़ता, हम अहंकार में भी दुखी होते हैं।

सतगुरु पूरे भेद बताया। मन को संग लेकर घर फेरा।।
मैं हूँ सुरत पड़ी बस तेरे। बिन तुम मदद शब्द नहिं हेरा।।

यह आत्मा की फरियाद है कि मुझे मेरी जिंदगी में पूरे सतगुरु मिले हैं। सतगुरु ने कहा है कि तू मन को साथ लेकर आ जा। मैं जन्मों-जन्मों से तेरे बस में पड़ी हुई हूँ। तू मुझे जहाँ भी लेकर गया मैं गई हूँ। अब मैं तेरी मदद के बिना न शब्द को सुन सकती हूँ और न शब्द के साथ जुड़ सकती हूँ। जिस घर में मियाँ-बीवी की खटपटी मची हुई हो वह घर किस तरह शान्त हो सकता है, किस तरह तरक्की कर सकता है?

आत्मा परमात्मा की अंश है, प्यार अशां-अंशी होता है। आत्मा का झुकाव परमात्मा की तरफ बना ही रहता है लेकिन मन बाहर की तरफ ही दौड़ा फिरता है।

जो यह कहन न मानो मेरी। तो चौरासी करें बसेरा।।
अब तुम दया करो मेरे ऊपर। सुन बिनती खोजो धुन नेरा।।

अब आत्मा मन से कहती है, ''अगर तू मेरा वचन नहीं मानेगा तो तू पहले चौरासी लाख योनियों में से आया है कभी गधा बना, कभी घोड़ा बना, कभी बैल बनकर जमींदारों के डंडे खाता रहा कभी किसी योनि में तो कभी किसी योनि में फिरता रहा है।

अब यह मौका है अगर तू मेरी मदद करे तो हम चौरासी लाख योनियों से बच जाएंगे।''

हम तुम दोनों चढ़ें अधर में। जाकर बसें पहाड़ सुमेरा।।
तुम वहाँ रहना राज कमाना। हम पहुँचें जहँ राधास्वामी डेरा।।

आत्मा मन से कहती है, ''हम दोनों ऊपर सुमेर पर्वत पर चलें, ब्रह्म में चलें। तू वहाँ जाकर राजा बन जाना। मैं सतपुरुष के पास चली जाऊंगी। अगर मेरा कहना नहीं मानेगा तू पहले भी कुत्ता-बिल्ला बनता आया है फिर कुत्ता-बिल्ला बन जाएगा। अब तक चौरासी लाख योनियों में धक्के खाते हुए तेरी तसल्ली नहीं हुई।''

मन बोला सुर्त से फिर ऐसे। विषय स्वाद मोसे जात न छोड़ा।।

अब मन आत्मा से कहता है, ''प्यारी! मैंने तेरी विनती को अच्छी तरह समझा है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ लेकिन विषयों की जहर मेरे दिमाग को चढ़ी हुई है इसने मुझे बेबस कर रखा है।''

कैसी करूँ बचन कस मानूं। मैं इन्द्री बस हुआ न थोड़ा।।

मन आत्मा से कहता है, ''प्यारी! मैं क्या करूं? मैं कोई थोड़ा सा इन्द्रियों के बस में नहीं हुआ। मैं जब पशु था तब भी इनके बस में था। जब पक्षी था तब भी भोगों ने मेरी जान नहीं छोड़ी। जब इंसान के जामें में आया तब भी इन्द्रियों के भोगों ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। मैं किस तरह इनसे अपनी जान छुड़वाऊं? मैं सब कुछ जानकर भी बेबस हुआ बैठा हूँ।''

बुद्धि मन के बस में है और मन इन्द्रियों के बस में है। जो इन्द्री चाहती है अपनी तरफ खींचकर ले जाती है। कान की इन्द्री राग पर, जुबान की इन्द्री अच्छे खानें पर और आँखों की इन्द्री सुंदर रूप पर ले जाती है इसी तरह बाकी इन्द्रियों की हालत है।

बल पौरूष मैं सब ही हारा। अब इन से मेरा चले न जोरा।।

मेरे अंदर जो बल और हिम्मत थी वह मैं इन्द्रियों के बस होकर सब हार चुका हूँ लेकिन ये मेरा पीछा नहीं छोड़ती।

मैं चाहूँ छोड़ूँ भोगन को। देख भोग बस चले न मोरा।।

अब मन प्यार से आत्मा को कहता है, ''देख प्यारी! मैं तो भोगों को छोड़ना चाहता हूँ, मैं कसमें भी उठाता हूँ कि मैं फिर ये बुराई नहीं करूंगा लेकिन जब मेरे सामने कोई भोग आकर खड़ा हो जाता है तो मैं अपना ज्ञान-ध्यान, पढ़ा-पढ़ाया सब भूल जाता हूँ; बस उसी तरफ हो जाता हूँ।''

बहुत से मियाँ-बीवी मेरे पास आकर कसमें भी उठा लेते हैं कि हम आगे ऐसी कोई हरकत नहीं करेंगे लेकिन कुछ दिनों के बाद मन उन्हें मना लेता है। मियाँ, बीवी में नुख्स निकालता है कि यह नहीं मानी और बीवी, मियाँ में नुख्स निकालती है कि यह गुस्सा करता था। आप सोचकर देखें! गुरु ने कौन सा वायदा करने के लिए कहा था? पहले वायदा करते हैं बाद में एक-दूसरे में नुख्स निकालते हैं। हमसे यह सब कुछ हमारा मन करवाता है। यह मन मकरा भी है तकड़ा भी है चतुर भी है और चालाक भी है; यह नुख्स भी बता देता है और पाप भी करवा लेता है।

मेरे पहले दूर की बात है कि मैं पश्चिम के एक जोड़े की बात बताया करता हूँ वे नौजवान मजबूत थे। उन्होंने मेरे पास आकर कहा कि हम शादी करवा रहे हैं लेकिन हम एक-दूसरे के नजदीक नहीं जाएंगे। मैंने उस जोड़े की तरफ गौर से देखा कि जिंदगी में इस तरह के पहली बार ही मिले हैं। मैंने कहा कि हाथ के ऊपर कोयला रखकर हम यह कहें कि हमारा हाथ काला न हो जाए। कुछ समय बाद उनके बच्चे भी हुए लेकिन वे अभी भी एक-दूसरे में

नुख्स निकालते हैं। वह कहता है कि मैं ठीक था, वह कहती है कि मैं ठीक थी। मैं उन्हें देखकर हँसने लगता हूँ कि किस तरह हमारा मन हमसे खेल करवाता है?

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मन कहता है कि मैं बहुत पछताता हूँ कसमें खाता हूँ लेकिन जब दुनिया के भोग सामने आ जाते हैं तो मैं उन भोगों को छोड़ नहीं सकता।''

आगे पीछे बहुत पछताऊँ। समय पड़े पर होवत चोरा।।

हर एक के मन की यही हालत है। हम आगे-पीछे पछताते भी हैं लेकिन जब वक्त आ जाता है हम सब कुछ भूल जाते हैं।

मैं अपने पिछले गाँव की कहानी बताया करता हूँ कि मेरे खेत के बीच में रास्ता होता था। थोड़ी दूर नामधारियों के गुरु साहब जी सतसंग देने के लिए आए। उन्होंने मुझसे विनती की कि प्रेमी लोगों ने सतसंग सुनने के लिए नहीं आना हमें बड़ी परेशानी होगी। मैंने हँसकर कहा कि मैं युक्ति बता देता हूँ कि देखें! परमार्थ के लिए झूठ बोलने से क्या बनता है? आप किसी गाने बजाने वाले का नाम ले दें। उन्होंने रेडियो सिंगर का नाम ले लिया।

फिर कोई नामलेवा नहीं रहा। वे सब मेरे खेत में से गुजर रहे थे तब मैंने उनसे कहा, ''भले मानसो! तुम मेरे पास बैठकर भजन करो।'' उन्होंने कहा कि बाबा जी! हम बैठ तो जाएंगे पर हमारा मन तो वहीं होगा। उन दिनों में सड़क नहीं होती थी। वे लोग दस मील पैदल चलकर गए। जब वहाँ गए तो वहाँ गाने-बजाने वाले नहीं थे। नामधारियों के गुरु साहब ने कहा कि रोज उठकर पूरा स्नान किया करो, वाहेगुरु का जाप करो, चाय न पिओ, शराब के तो नजदीक भी न जाओ, इंसानी जामा बहुत अच्छा है।

अब उन लोगों को ऐसी बातें क्यों अच्छी लगें वे फौरन ही वापिस आ गए। मैं खेत में ही था क्योंकि मैं वहीं रहता था। मैंने उनसे पूछा क्या हुआ? उन्होंने कहा बाबा जी! आज हमारे साथ बहुत मजाक हुआ। मैंने कहा मजाक किस बात का वह आपसे जो कहते हैं आप करें। उन्होंने भी यही कहा कि आप परमात्मा को याद करें इंसानी जामा उत्तम है। मैंने भी यही कहा था यहाँ भजन पर बैठ जाओ। हमारी यही हालत है जब हमें सुनने के लिए ऐसी चीज मिलती है तो हम अपना सब कुछ छोड़ देते हैं हम किसी की बात नहीं मानते।

कैसे चढ़ूं गगन को प्यारी। मैं चंचल ज्यों दौड़त घोड़ा।।

अब मन आत्मा से कहता है , ''प्यारी! मैं किस तरह अपने घर गगन पर चढ़ूं! मेरी हालत चंचल घोड़े की तरह है जैसे चंचल घोड़ा एक जगह ठहरता नहीं कूदता ही रहता है।''

हमारा मन न सोते हुए टिकता है न जागते हुए टिकता है। जिस तरह फास्फोरस की अग्नि कभी जल जाती है कभी बुझ जाती है। चाहे हवा हो या न हो दीपक की लौ हिलती रहती है। कछुए का सिर कभी पानी के अंदर होता है कभी बाहर होता है, यही हालत हमारे मन की है।

ताते तोसे कहुं जतन मैं। चल सतगुरु पै करो निहोरा।।

अब आत्मा मन से कहती है, ''तेरी हालत ऐसी है तू चंचल हो चुका है घोड़े की तरह दौड़ता है लेकिन मेरा गुरु पूरा है वह हमें वह रस देगा जिससे शान्ति आ जाएगी हम दौड़ने से बच जाएंगे।''

सरन पड़ें मिल कर अब हम तुम। कर सतसंग होयँ कुछ पोढ़ा।।

हम चलकर सतगुरु के चरणों में गिर पड़ें। हे सतगुरु! हमने अब तक बहुत गुनाह किए हैं थककर चूर हो गए हैं, अब हमें बख्श दें।

नानक गरीब ढह पया द्वारे हर मेल लयो वडयाई।

हम भटक कर थक गए हैं अब बड़ाई इसी में है कि आप हमें अपने साथ मिला लें। सन्त गरीब नवाज होते हैं अगर हम सच्चे दिल से विनती करें तो वे हम जन्मों-जन्मों से भटके हुओं को माफी देने के लिए ही आते हैं। सच्चाई तो यह है कि परमात्मा ने सन्तों के पास बहुत माफी रखी है।

दया करें सतगुरु जब अपनी। पल पल राखें मोको मोड़ा।।
मैं अपने बल चढ़ूँ न कब ही। जब लग मिलें न गुरु बंदी छोड़ा।।

अब मन को अपने घर की याद आ गई अपनी कमजोरी का पता लगा। अब मन आत्मा से कहता है, ''प्यारी! मैं अपने बल से कभी भी ऊपर नहीं चढ़ सकता, घर की तरफ नहीं चल सकता। जब तक गुरुदेव मेरे ऊपर खुद ही दया नहीं करते वह पल-पल मुझे बचाकर रख सकते हैं।''

सुन कर सुरत अधिक हरखानी। चल जल्दी वह बंधन तोड़ा।।

आत्मा तो पहले ही परमात्मा से मिलना चाहती थी, मन के आगे विनती करती थी। जब मन तैयार हो गया तब आत्मा ने मन से कहा, ''जल्दी चल और सोचने की क्या जरूरत है, सिमरन करके ऊपर चढ़।''

सतसंग सरन गही अब दोनों। भर भर पीवत अमी कटोरा।।

जब दोनों सतसंग में गुरु चरणों में गिर जाते हैं तो धीरे-धीरे सतगुरु के वचन असर करने लग जाते हैं।

सन्त जो वचन बोलते हैं उनमें मिठास होती है अमृत होता है। जब हमारा मन भी हमारी आत्मा के साथ सतसंग में बैठ जाता है सन्त इन्हें वह अमृत पिलाते हैं तो ये शान्त हो जाते हैं।

हमारी यह हालत है कि हम तन को तो सतसंग में ले आते हैं लेकिन मन को साथ नहीं बिठाते। हमारा तन सतसंग में बैठा होता है लेकिन मन बाजारों में या कारोबार में फिरता है। हम मन को समझाने के लिए सतसंग में बैठे हैं, हम मन को भी यहीं रखें।

दोनों मिल कर चढ़े गगन को। शब्द शब्द रस हुए चटोरा।।

ब्रह्म तक आत्मा और मन दोनों ने इकट्ठे जाना है। स्थूल दुनिया छोड़ी सूक्ष्म में गए फिर ब्रह्म में गए। मन ब्रह्म में से ही आया था और ब्रह्म में ही पहुँच गया।

दया करी राधास्वामी उन पर। हीरा मोती लाल बटोरा।।

सतगुरु दया का रूप है लेकिन हम कितने जीव उनकी दया को प्राप्त करते हैं। आत्मा और मन दोनों मिलकर सहँसदल कँवल, ब्रह्म में चले गए। मन ब्रह्म की पैदाईश थी, मन ब्रह्म में पहुँच गया आत्मा मन के पंजे से आजाद होकर अपने घर सतलोक पहुँच गई।

स्वामी जी महाराज ने बड़े प्यार से बताया कि पहले मन विषय-विकारों के जंगल में भटक रहा था। जब तक कोई सन्त या गुरु नहीं मिलता नाम नहीं मिलता हम नाम की कमाई नहीं करते तब तक हमारा मन चंचल घोड़े की तरह दौड़ा फिरता है। यह मन न रात को टिकता है न दिन में टिकता है न सोते हुए टिकता है न जागते हुए टिकता है न पढ़-पढ़ाई से ही टिकता है। इसे टिकाने का तरीका गुरु का नाम है। नाम के बिना मुक्ति नहीं, नाम के बिना यह बस में नहीं आता। गुरु साहब कहते हैं:

राम नाम मन बेधया अवर की करे विचार।

अब और विचार करने की जरूरत नहीं फिर हमारा मन उस ताकत राम के साथ शब्द के साथ जुड़ जाता है।

नाम विसार चले अनमार्ग अंत काल पछताही।

अगर हम नाम को छोड़कर किसी भी रास्ते पर जाते हैं चाहे जप-तप करें, पूजा पाठ में लग जाएं आखिर में हमें पछताना पड़ता है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

पानी मथे हाथ कुछ नाहीं, खीर मथन आलस भारा।

हम पानी को मथ रहे हैं पानी में से झाग निकलती है मक्खन नहीं आता। हम दूध मथने के लिए आलसी हैं। हम सुरत-शब्द की कमाई नहीं करते अगर कोई बाहरमुखी कर्मकांड करना है तो हम में कोई आलस नहीं; बाहर छिलका है अंदर गिरी है। सन्त हमारा ख्याल कर्मकांड से निकालकर अंदर नाम की तरफ लगा देते हैं जो स्वाद गिरी में है वह छिलके में नहीं होता।

अमेरिका की कहावत है किसी पेड़ का फल खाने से उसके गुण का पता लगता है। नाम को प्रकट करके नाम के साथ जुड़कर नाम प्राप्त करके ही हमें पता लगता है कि नाम के क्या फायदे हैं।

हमें भी चाहिए स्वामी जी के कहे मुताबिक अपने जीवन को पवित्र बनाएं। मन को सदा ही 'शब्द-नाम' के साथ जोड़े रखें जो मौका परमात्मा ने दिया है इससे पूरा-पूरा फायदा उठाएं।

राधास्वामी ऐसी मौज दिखाई। मार लिया अब काल कठोरा।।

***

10 जनवरी 1994

धन्य अजायब

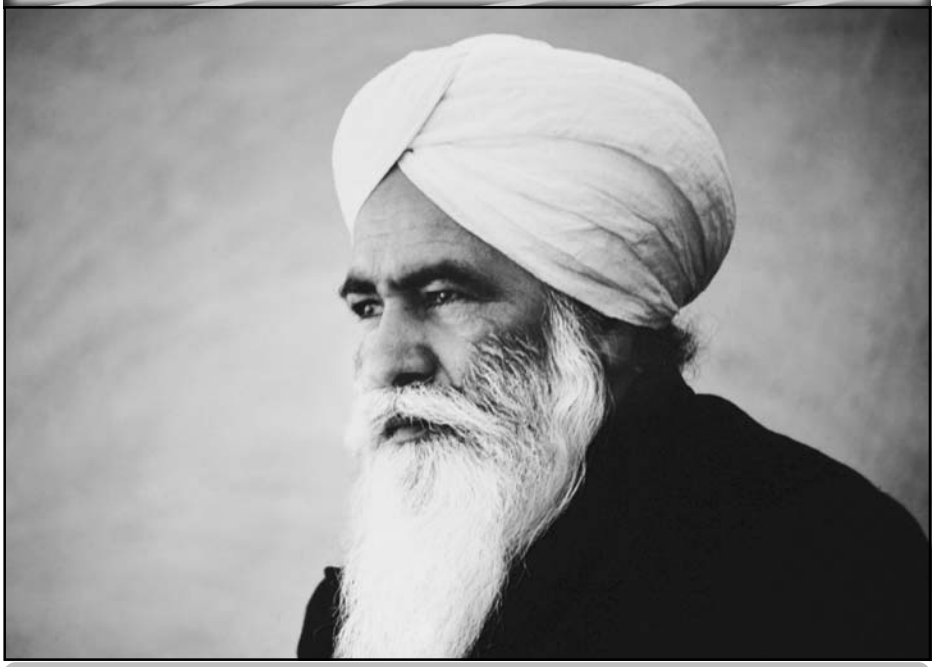

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

28 से 30 अक्टूबर 2016

25 से 27 नवम्बर 2016

23 से 25 दिसम्बर 2016

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

04 से 08 जनवरी 2017

फोन 98 33 00 40 00 व 93 24 65 13 21